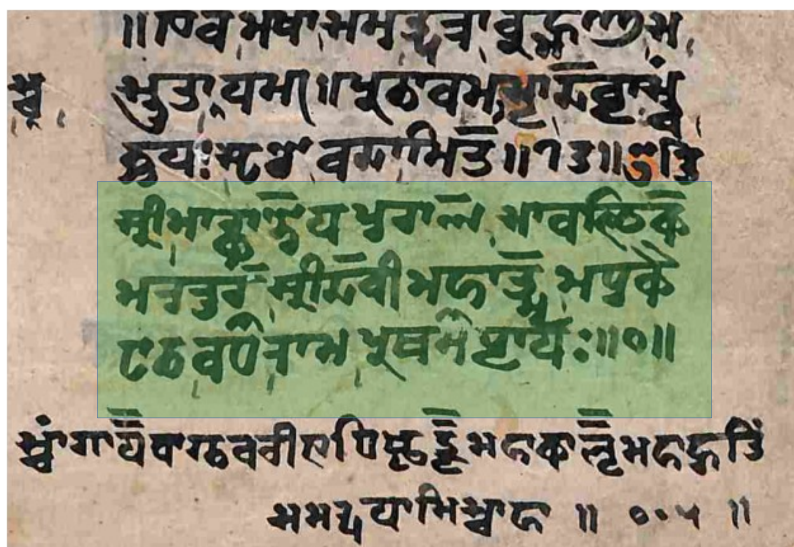
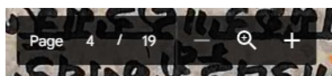
25.12.22.pdf

Title : Devi Mahatmya (Markandeya Purana – Madhu Kaitabha Vadha)





वृक्षल्ली [illegible] [illegible] ॥ [illegible]
वं [illegible] [illegible] [illegible] माहेश्वरी ॥ [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
म ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कल्पं
[illegible] ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] योगिनी ॥ [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] नारायणी [illegible] ॥ [illegible] [illegible]
वाराहि [illegible] [illegible] वैष्णवी ॥ [illegible]
कीर्तिश्च लक्ष्मीश्च [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] [illegible] देवी [illegible]
[illegible] [illegible] ॥ [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] ॥ [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] देवी [illegible] [illegible] [illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

संपूर्णं द्वितीय पटलम् ॥ श्रीविष्णु-

ऋषिः ॥ श्रीभगवल्लक्ष्मीर्देवता ॥ [illegible]

[illegible] कीलकं ॥ [illegible] शक्तिः ॥ [illegible]

[illegible] ॥ श्रीभगवल्लक्ष्मीप्रीत्यर्थं

द्वितीयपटलपाठे विनियोगः ॥ [illegible]

[illegible]

धुं ममवस्त्रा बृहत्वर्षि ॥ किमन्येन
वरोक्तेन तेनाव्रिष्टं कृतं भवेत् ॥ १
२ ॥ दधिकं वामं ॥ वर्जितास्तेषि
तैलान्नं भक्षभूमिशयनं न गच्छेत् ॥
विलिखेत्तासुं गन्धैस्तु भगवान् कमल
[illegible] ॥ १४ ॥ सुवर्णं जित्वा यत्रेषी
मालिलेन धारिपूतां ॥ १६ ॥ दधि
नवाम्नां उपेत्य कृत्वा भगवत्तां सा
भक्त्या गव्यहुतां ॥ ततस्तु मन्त्रैः लक्ष्मी
श्रिया स्मृतिर्भवेत् सिद्धी तथैव ॥ १७
॥ एवं भक्त्या सम्पूज्य बृहस्पतिं
भुक्ता यस्मा ॥ धूतवस्त्रा दत्त्वा
स्तुयः सत्य वज्रभिति ॥ १८ ॥ इति
श्रीभविष्योत्तरपुराणे आवल्लिके
भन्तरे श्रीदेवी भक्त्या भद्रके
उक्त वचनं शुभमेधार्थः ॥ ० ॥

श्रीगणेशाय नमः वर्णावलि पितृहस्ते मधुकल्ले मधुकस्ति
समाप्तमिदम् ॥ ०५ ॥

नाभस्मिन्प्रतिष्ठितः॥ यावद्यावत् ... वक्ति
यावद्यावन्नेन प्रभो॥ प्रसादात्तव
तव॥ उपमायोधिमतुमः॥ स्तुहि
हुतं मान्धितु॥ उवाच वयातया॥ उ
पतेयानुवाकं बलप्रभु सृजि उद्भवः
गन्धर्वैरपि ज्ञानिपूर्वी॥ सुरगन्धर्वपति
वंशगाः पितृवरपूर्वपितृणां मतिः॥ शिव
भक्तं मि बजती वित्तिप्रभु मुद्रेषु
तुते तमः॥ येते गन्धर्व नमस्कृते युक्त
मेन वतिद्रव समीति मत्रखुउतते
मधुमधुते॥ गन्धर्वीपुष्पहेलासनीम
चक्रत निवमनीमा॥ हस्तेहगावंती
हस्तं विश्वसृष्टा गते निर्मलमा॥ मंव
मिनी भयमनी गज नद्र भागिनी
मा॥ भूपत्रैः शिवं गन्धर्वी हस्तेपाठ
मसभाजि॥ गन्धौ॥ कालगन्धौ॥ उल

फ
स
०७

५ ॥ श्व

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

मन्त्रयः॥ रक्तमत्तिकमृतजा हूमदेवी॥ इति
॥ ऋषिविव्यायभद्राभद्रागि॥ भमाकी बूल
ये पा० विनियोगः॥ ब्रह्मविष्णु अजेश्वर
ऋषिभ्यो नमः शिरसि॥ गायत्र्युष्णिगनुष्टु
ब्छन्दोभ्यो नमः मुखे॥ भजकलीभज ल
ली भज भरम्वदे देवतायै नमो हृदि॥
नमः साकभगी ठीमामतिहे नमो गुह्ये
मुखे॥ रक्तमत्तिका मृतजा हूमदेवीगी ल
हे नमो वामस्तने॥ ऋषिविव्यायभद्रा हृ
हे नमो नाभौ॥ ह्रीं क्लीं मामभ्रूयावि
ह्रुँडि अलनकरे भमहा॥ ... अङ्गुष्ठा ह
हुं नमः॥ ह्रीं उग्रनी हुं नमः॥ क्लीं मध्य
मां हुं नमः॥ सामभ्रूये अनामिकां हुं
नमः॥ विस्रुक कनिष्ठकां हुं नमः॥ अल
करतलकरपृष्ठाभ्यां हुं नमः॥ ... हृदयाय॥ ह
ह्रीं शिरसे॥ क्लीं शिखायै॥ सामभ्रूये

म भः ०३

श्रीगणेशाय नमः॥ शिवाय नमः॥ गुरवे नमः॥ श्री
परदेवतायै नमः॥ ॥ अथ सप्तशती
प्रयोग विधानम्॥ न्यासः॥ अस्य श्री
सप्तशती स्तोत्रमालामन्त्रस्य ब्र
ह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः॥ श्रीम
हाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यो
देवताः॥ गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छ
न्दांसि॥ नन्दाशाकम्भरीभीमाः शक्त
यः॥ रक्तदन्तिका दुर्गाभ्रामर्यो बीजा
नि॥ अग्निवायुसूर्यास्तत्त्वानि॥ मम
श्री(जगदम्बा)प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः॥ ब्रह्मवि
ष्णुरुद्र ऋषिभ्यो नमः शिरसि॥ गाय
त्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः मुखे॥ महा
काली महालक्ष्मी महासरस्वती देव
ताभ्यो नमः हृदि॥ नन्दाशाकम्भरीभीमा

गलिमवालिमवुयवुलिकुउल॥
कुमरः॥ पिमगम्नुव कुलए मुंयपेकि
मरए॥ भजए॥ कुलए मला डुकि
नीमर्कीनीमया॥ मतुविद्रुमर्मचि
ग मंकिनुमुभज वला॥ गुजकु
उ पिममम्नु यद्रुगवुवगद्रुल॥
वुकुगद्रुम वउल॥ कुमुमुठ
गवमय॥ मज्ञनतुमू नमूत्तिक
यर्मकुयिमंभिुउ॥ मनी उत्तिवड्रुं
मं उलिवद्रुकीपगभ॥ यमभा
वचउभीपि कीतिभण्डि उक्रुउल॥
एपद्रुमु मडी मकीज्ञइतु कवमं
धग॥ उभ्यएपझ्रु कुवमं
भवकभमं॥ निवियुमठवज्ञिद्रि
मुकीएपभमुक्रुवः॥ यावज्रुभिए
गं वद्रु मभिल्यनक नर्मभा॥ उपवि

॥ ह मं ००

उ

७५॥ यचमकं उवासुडं कीयूगम
चगरुष॥ उधगे विमलो उद्वै
वीयकमज उम म७७॥ घूडु ली
यक रत्नानि भमभु भुडु लीथ
म॥ विस्तकम मणे उमे धरत्तं
मति निम्मलमा॥७१॥ यम्भू
नेकडु पालि उवाठेम्भ मंभगमा
॥यमूानपद्म एं भालं मिगमूर
भिजपरमा॥ गमगल लणि
भुमेपद्म एं मति निम्मलमा७३॥
जिभवा त्राजनं भिजं रत्नानि विवि
वनिम॥ जजवसु ईंभगयाधग
पांडु पना पिय॥७४॥ सेयम्भूभव
नागेसे भज मलि विक्रुधिउमा॥
नगजां मसे उमे पउुयः धावि
वीभमभा॥७०॥ मदेगीप्रभवं

वीक्षवल्लिगञ्जुर्भुख॥ भभम नित्ता
ननमिस्ने भमत्तुजमं भजमृजः॥३०
॥ उमृनामिन धैरल्लतत्त्वमाप्रि
उं नतः॥ मभायत त्रिभजत्ता पृति
मवु भज नक्रुत॥ ॥ मद्दु क्रम
कल लेक भ भदु स्नमकर्भि रे
॥ ममल्लवभणमेल भकलम्न
भजीवः॥ ॥ रम्येत्रिम भूम
मेवाभुम्र मृक्षि जवाजनभा॥ उ
भुवम्मनयम्नैन कत्रि नभूक्ष्मुयः
॥ ३२॥ मछु भमभं भंजढु इलैरि
भभग रयुः॥ भत्रठु पिलभैत्र
मुभभउभू कफ युपः॥ ३४॥ स्रुः
कि भेउ मित्रि त्रेणक कम्यू भजिव
भगः॥ महकवउंउमवु भूमेवर
भरिकउः॥ ॥ भमरम्न उउमेवी

श्री
भ
७५

भजभ्येवै गनेकै पगिवागितुः॥बद्रि
गणानां केतुम यन्तु उभित्र यहतु
॥२३॥ रितुलागि युतानं मथन्नु
मन्तु गवायुतेः॥ युयुपूम पगेउडु
गणानं परिवागितुः॥२४॥ मवृ
पितुयुतुसि गणनागजयै वताः
युयुपः मंयुगं मन्हभजउभजभ
रः॥२५॥ कोटि कोटि भजयैश्र
गणानां मतु मं उबा जयानां म
वतैयुतु उडा कुम जिषाभरः॥२
६॥ उभगेत्रि पालेश्र मत्तेति
मुसलैभुबा॥ युयुपु मयुगंमन्हः
॥ पत्रुः भमतु पडु मः॥२७॥ केवि
म्रुमितुषः मत्रीः॥ केमित्रु मंभु
बाभर॥ मवीपत्रु भजनैभु उत्तं
जतुभमत्रमः॥२८॥ भगपमवीउ

ग
मं
३०

उभ्रानि सधु ऋ भूलि सध्कि क ॥
लीलयैव भुमि स्कुप विद्ग सभुभु
वर्दिनी ॥ ४७ ॥ ज्ञानायसु वनौ
वीभुयभान भवसिद्धि: ॥ सभैम
भवमेकेष सभु ऋ भूलि मैसुवी
॥ ४८ ॥ मैपिवू हैकुड भपे मैहा
वाजन कै भवी ॥ समान भवमै तू
पवनै ध्रुव ऋडम्मनः ॥ ५० ॥ नि:
घामान्नु भर्गा यंसु युछु भवार
लभिक ॥ उपव भनूः भक्तुग
सुड भजभूम: ॥ ५१ ॥ युयपस्तुभ
रसुक्तिस्थिमि भालभि भद्धु मैः
॥ नमयत्रे भवगा ज्रवीमबुभ
वं जितः ॥ ५२ ॥ स्वरायकु पट
ज्नुञ्: साकं भुग भर ॥ मन्तं
सुतव [illegible] वाद्दे उभिमङ्कु भजे

ङ्गवे ॥ ५२ ॥ उक्तं देवी इक्ष्वाकुलेन
गम्यमानं वक्षुर्युक्तिः ॥ पश्चात् कृ
ष्णस्य तस्मै नियमत्वात् भक्तिर्भव
ति ॥ ५४ ॥ पात्रयत्नस्य धर्मवान्
त्रुटिभुवनं विभेदितम् ॥ कस्मा
त् कुर्विपर्यमेन वक्षुर्यास्त्रकर्म
॥ ५६ ॥ केशिसिद्धिर्पदत्तं भीरु :
पक्षपाते भुवनपरं ॥ विपर्यस्त
विपाते न गम्यन्ते विमेयत्ता ॥
॥ विधः केशिसूत्र जयिनं भग्नलिन
मन्दत्वः ॥ किं मित्रपतिद्रुमेति
त्वः कुलेन वक्षुभिः ॥ ५७ ॥ विमृ
शः सर्वेपि न ततः केमितु ~
लि रे मेनावकागिनः धूर्तमृ
सर्पिष्मसाग्यः ॥ ५८ ॥ केपांक्षिर
जवः क्षितिः क्षिप्तगीवाभुवपरं
३

॥ [illegible]
[illegible] ॥ ९ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १० ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥
११ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १२
॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १३ ॥
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ १५ ॥ [illegible]
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ॥ १६ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १७
॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १८ ॥ ॥ ॥
ॐ इति श्री [illegible]
[illegible]
[illegible] द्वितीयोऽध्यायः ॥
२ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]